International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 6.972 Volume 11, Issue 1, Jan 2024
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

रविन्द्रनाथ त्यागी का व्यंग्य साहित्य: एक अध्ययन

अमित पाल
शोधार्थी
डॉ सुधा सिंह
प्रोफेसर
महात्मा ज्योतिबा फूले रुहेलखंड यूनिवर्सिटी बरेली

सार
साहित्य के क्षेत्र में व्यंग्य साहित्यकारों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है। यद्यपि संत साहित्य में कबीरदास जी ने तत्कालीन समाज में व्याप्त विसंगतियों की ओर अपने काव्य में प्रहार किया है। संतों की दृष्टि सुधारात्मक रही है। हिंदी में गद्य साहित्य के विकास के साथ व्यंग्य ने भी प्रगति की। व्यंग्य का वास्तविक विकास स्वतंत्रता पश्चात हरीशंकर परसाई के साथ हुआ और व्यंग्य को भी एक सम्मानजनक और गंभीरता के साथ लिया जाने लगा। हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रविंद्रनाथ त्यागी व शंकर पुणताम्बेकर का समय जो कि व्यंग्य का आरंभिक दौर माना जाता है, से लेकर आज तक विभिन्न व्यंग्यकारों ने व्यंग्य के माध्यम से विविध विसंगतियों जैसे भ्रष्टाचार, लाल फीताशाही, राजनीतिक तथा प्रशासनिक क्षेत्र, सामाजिक कुरीतियाँ, जातिभेद, शिक्षा तथा कई अन्य विद्रूपताआ के ऊपर प्रहार कर उन्हें यथार्थ के धरातल पर उजागर कर उनका पर्दाफाश कर लोगो को सोचने पर मजबूर किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में व्यंग्य के विविध आयामों पर विचार किया गया है।

परिचय
रवीन्द्रनाथ त्यागी (अंग्रेजी: Ravindranath Tyagi, जन्म– 9 मई, 1930) प्रसिद्ध भारतीय व्यंग्यकार और लेखक थे। बहुत कम ही लोग जानते हैं कि त्यागी जी जितने अच्छे व्यंग्यकार थे, उतने ही बड़े कवि भी थे। एक आलोचक की मानें तो उनके साहित्यिक जीवन की सबसे बड़ी बात यही थी कि उनके व्यंग्यकार की लोकप्रियता ने एक बार उनके कवि की गरदन दबोची, तो फिर जीवन भर नहीं छोड़ी। हिन्दी में व्यंग्य आज एक प्रतिष्ठित विधा है तो इसका श्रेय उसको इस रूप में गढ़ने में हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल और शरद जोशी के साथ रवीन्द्रनाथ त्यागी द्वारा किये गये अप्रतिम सृजन को जाता है। रवीन्द्रनाथ त्यागी को वर्ष 1998 में प्रतिष्ठित श्राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मानश से नवाजा गया था।

रवीन्द्रनाथ त्यागी का जन्म 9 मई, 1930 को उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले के नहटौर कस्बे में माता चमेली देवी के गर्भ से हुआ और वे अपना समूचा बाल्यकाल घोर अभावों के बीच गुजारने को अभिशप्त रहे। इसके लिए पिता पंडित

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

मुरारीदत्त शर्मा की अकर्मण्यता को उन्होंने कभी माफ नहीं किया। उन्हीं के शब्दों में कहें, तो अभावों के दौर में जिंदगी उनके साथ प्रायः हमेशा जंग खाए मजाक की तरह पेश आती रही। फिर भी उन्होंने अपनी मेधा को कुंठित नहीं होने दिया और अत्यंत दारुण परिस्थितियों के बीच इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र विषय में एम.ए. की परीक्षा सर्वोच्च स्थान पाकर उत्तीर्ण की। इसके लिए उन्हें स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

इससे पहले की परीक्षाओं में भी उन्होंने एकमात्र अपने दृढ़ मनोबल के सहारे प्रथम श्रेणी और विशेष योग्यताएं पायी थीं। 1955 में उनका इंडियन डिफेंस एकाउंट्स सर्विस में अफसर के रूप में चयन हुआ और आर्थिक स्थितियां अनुकूल हुईं तो भी 36 साल की सेवावधि में उनके स्वाभिमानी व्यंग्यकार को यही लगता रहा कि यह नौकरी उसे निगलती जा रही है। नौकरी कितनी भी सुभीते की हो, वह किसी सर्जक को निर्बाध सर्जना कहां करने देती है। प्रतिभा और आत्मसम्मान की यह दुश्मन उसमें बाधा बनकर तो खड़ी ही होती है। लेकिन इस बाधा के बावजूद 4 सितंबर, 2004 को देहरादून में साहित्य–संसार को अलविदा कहने से पहले रवीन्द्रनाथ त्यागी उसको इतना कुछ दे चुके थे कि पूरे संतोष के साथ महाप्रयाण कर सकते थे।

लेखन कार्य

महाप्रयाण से पहले तक रवीन्द्रनाथ त्यागी अपने कृतित्व में 34 हास्य व्यंग्य संग्रह जोड़ चुके थे, जिनमें से कई का प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ ने किया था। उनका पहला संग्रह 'खुली धूप में नाव पर' 1963 में तो आखिरी 'बसंत से पतझड़ तक' उनके निधन के बाद 2005 में छपा। 1980 में 'अपूर्ण कथा' नाम से उनका एक उपन्यास भी आया था जबकि इससे पहले 1978 में उन्होंने 'उर्दू हिन्दी हास्य व्यंग्य' नाम से एक बड़ा ही प्रतिष्ठापूर्ण और दीर्घकालिक महत्व का संकलन सपादित किया था।

आज बहुत कम ही लोग जानते हैं कि त्यागी जी जितने अच्छे व्यंग्यकार उतने ही बड़े कवि भी थे। एक आलोचक की मानें तो उनके साहित्यिक जीवन की सबसे बड़ी ट्रेजेडी यही थी कि उनके व्यंग्यकार की लोकप्रियता ने एक बार उनके कवि की गरदन दबोची तो फिर यावत्जीवन छोड़ी ही नहीं। यह तब था जब उनके कविता संग्रह 'सलीब से नाव तक' के बारे में वरिष्ठ कवि हरिवंशराय बच्चन का मानना था कि उसे कम से कम दो बार 'ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया जाना चाहिए, क्योंकि अज्ञेय को 'कितनी नावों में कितनी बार' पर एक बार दिया जा चुका है।

अपने कवि क बारे में खुद त्यागी जी की काव्य पंक्ति है– षजिसने देखा नहीं मेरा कवि, उसने देखी नहीं मेरी सच्ची छविष् जबकि रघुपति सहाय फिराक गोरखपुरी सहृदयता और स्वतंत्रता को त्यागी जी के कवि के सबसे बड़े गुणों में गिनते थे।

उद्देश्य

1. भारतीय शास्त्रीय परंपरा के भीतर आर बाहर अन्य अनारक्षित चिह्नों का अध्ययन।
2. रवीन्द्रनाथ त्यागी के व्यंग्य साहित्य का अध्ययन

साहित्यकारों एवं विचारकों का मत :–

आक्रोश को व्यंग्य का अनिवार्य तत्त्व मानते हैं उनके अनुसार आक्रोश का अभाव व्यंग्य को निकृष्ट बना देता है। व्यंग्यकार शत्रु पर धावा बोलने के साथ ही उसको धराशायी घोषित कर देता है और इस प्रकार उसको उपहास का पात्र बना देता है। यह शत्रु की खिल्ली उडाकर उस पर सचमुच विजय प्राप्त कर लेता है किन्तु व्यंग्यकार की यह वास्तविक विजय न होकर नैतिक विजय होती है। व्यंग्य के लिए अनिवार्य आक्रामकता का निरूपण कर, उसकी प्रकृति को स्पष्ट करती है। दूसरी ओर व्यंग्यकार के नैतिक पक्ष के साथ उसके मनोविज्ञान को यह कहकर स्पष्ट

करती है कि उसका उद्देश्य वास्तविक विजय के स्थान पर नैतिक विजय प्राप्त करना है। मैथ्यू हागर्थ व्यंग्य को चेतावनी के रूप में लेते हुए कहते हैं कि, मनुष्य वह खतरनाक जानवर है जिसमें मूर्खतापूर्ण कार्य करने की असीमित क्षमता है। व्यंग्य द्वारा यदि इस सत्य की अभिव्यक्ति कर दी जाती है तो वह पर्याप्त है।

बर्नार्ड शॉ कहते हैं .....'मूर्खों को प्रोत्साहन देने के बजाय हास्य द्वारा उन्हें ध्वस्त करने तथा विकृति को विनोद भाव से न स्वीकार करने वालो ं पर ही संसार की मुक्ति निर्भर करती है। बर्नार्ड शॉ हास्य द्वारा अवगुणो ं अथवा विकृतियों को नष्ट करने वाली रचना को व्यंग्य मानते हैं। जबकि मेरीडिथ के शब्दो ं मे ं 'हास्यास्पद का इतना अधिक मजाक उडाया जाता है कि उसमें दया एवं सहानुभूति समाप्त हो जाय, तब वह हास्य, व्यंग्य की कोटि में आ जाता है।' 'अच्छा हो या बुरा, सामान्य हो या विशिष्ट, सत्य हो या मिथ्या, हिंसक हो या हास्यप्रद, गद्यात्मक हो या काव्यात्मक, मानव और उसके आचार के दुर्गुण एवं मूढ़ता पर किया गया साहित्यिक आक्रमण एक व्यापक शब्द 'व्यंग्य' के अंतर्गत रखा जा सकता है।

व्यंग्य युग की विसंगतियों की वैदग्ध्यपूर्ण तीखी अभिव्यक्ति है। युग की विसंगतियाँ हमारे चारों ओर के यथार्थ जगत से, वैदग्ध्य इन विसंगतियों को वहन करने वाले शैली–सौष्ठव से तथा तीखेपन, विसंगति एवं वैदग्ध्य के चेतना पर पड़ने वाले मिले– जुले प्रभाव से सम्बन्धित है। इन समस्त विचारों–मंतव्यों से यही तथ्य सामने आता है कि व्यंग्य का उद्‌भव विसंगतियों का निर्ममता से पर्दाफाश करने के लिए होता है। व्यंग्य में समाज की विरूपताओं तथा विद्रूपताओं की आलोचना, उनको नकारने के भाव से नहीं वरन् उनसे टकराने का साहस पैदा करने के लिए होता है। पाश्चात्य और भारतीय दोनों ही अवधारणाएँ जीवनगत विकृतियों, असंगतियों एवं विरूपताओं को व्यंग्य का कारण तत्त्व मानती है, तथा प्रहारात्मकता को व्यंग्य का प्रयोजन। व्यंग्य का यह प्रयोजन अपने विषयानुरूप विविधता लाने हेतु भाषा की व्यंजना–शक्ति का प्रयोग करता है। कहीं–कहीं वक्रोति– ाक्ति भी काम करती है, जो व्यंग्य हास्य के रूप में है। भारतीय और पाश्चात्य विचारकों की परिभाषाओं का अध्ययन करने के पश्चात्य हम स्वयं व्यंग्य की परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं। व्यक्ति एवं वर्ग की दुर्बलताओं, अवगुणों, मूर्खताओं, कथनी और करनी के अंतर तथा समाज में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास आदि बुराइयों पर जब उपहास, वक्रोक्ति, विडंबना, अतिरंजना, अपकर्ष अथवा किसी ऐसी ही अन्य विधि से प्रहार किया जाता है तो उसे व्यंग्य कहते हैं।

व्यंग्य की प्रकृति या स्वरूप

व्यंग्य साहित्यिक अभिव्यक्ति कारक सशक्त माध्यम है। जिसका लक्ष्य विसंगति एवं विद्रूप का पर्दाफाश कर उस पर प्रहार करना है। व्यंग्य का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि सभी साहित्यिक विधाएँ उसमें समाहित हैं। कार्टून अथवा व्यंग्य चित्र से लेकर कविता, कहानी, निबंध, नाटक, उपन्यास, साहित्य की प्रत्येक विधा में मात्र व्यंग्य एक सशक्त माध्यम के रूप में विद्यमान है। वास्तव में साहित्य की हर विधा में व्यंग्य है।

अब प्रश्न यह है कि व्यंग्य को एक स्वतंत्र साहित्यिक विधा स्वीकार किया जाये अथवा नहीं? व्यंग्य को ठीक उसी तरह से साहित्यिक विधा तो हम नहीं मान सकते जैसे कि उपन्यास, कविता, कहानी, नाटक अथवा निबंध। सभी रचनाओं में व्यंग्य मुख्यतः या आंशिक रूप से विद्यमान संहिता है। व्यंग्य अथवा अंदाज बयां करने या शैली के रूप में आता है। 'राग दरबारी' उपन्यास में व्यंग्य है, हरीशंकर परसाई में 'भोलानाथ का बोन' मे ं व्यंग्य है, तो कविता के क्षेत्र में निराला जी उत्कृष्ठ रचना 'कुकुर मुत्ता' व्यंग्य का अन्यतम उदाहरण है। इस प्रकार इन सभी में भिन्न–भिन्न साहित्यिक रूपों में व्यंग्य है। वास्तव में देखा जाये तो व्यंग्य साहित्य का अंतर्तत्व है बाह्य रूपान्तर नहीं। रचना अंशतः या पूणतः व्यंग्यात्मक हो सकती है।

विष्णु प्रभाकर की 'धरती अब भी घूम रही है' और हरीशंकर परसाई की 'भोलानाथ का बीन'' रचनाओं में व्यंग्य है। किन्तु यहाँ परसाई की कहानी की मूल संवेदना व्यंग्य ही है, यहाँ विष्णु प्रभाकर की कहानी का समग्र प्रयास व्यंग्य का नहीं है। वास्तव में व्यंग्य का सम्बन्ध वृति के बाह्य रूप से न होकर उसमें निहित अर्थ से होता है। व्यंग्य की प्रकृति को समझने के लिये इसके उद्देश्य, प्रेरणा और प्रविधि को भी जानना आवश्यक होगा। फ्रायड के मतानुसार व्यंग्य मजाक या परिहास को संबंधो ं की तरह अवचेतन मन की उपज और दमित प्रवृति की अप्रत्यक्ष अभिव्यक्ति माना है। हास्य या व्यंग्य भी सप्रयोजन और अबोध हो सकते हैं। व्यक्ति अपने निजी खास उद्देश्य या आधार बनाकर भी व्यंग्य कर देता है, और कभी मनुष्य अबोधता से भी व्यंग्य करता है या यों कई व्यंग्य अनायास भी हो जाता है।

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य :

हिंदी–साहित्य में व्यंग्य के प्रयोग की परंपरा सर्वप्रथम कविता में परिलक्षित होती है। आदिकालीन सिद्ध और नाथ पंथी कवियों के काव्य में व्यंग्य का भरपूर और प्रभावशाली उपयोग हुआ है। सातवीं या आठवीं शताब्दी मे ं सिद्ध सरपहा, हिंदी के प्रथम कवि ही नहीं, प्रथम व्यंग्यकार भी थे। तत्कालीन वैदिक अनुष्ठानों की निरर्थकता, बाह्याचार तथा पाखंड पर उन्होंने तीखे व्यंग्य–प्रहार किए हैं। उन्होंने ज्ञान–दंभी पंडितों, लंपट साधुओं की खूब खिल्ली उड़ाई है। ज्ञान का ढ़ोंग करने वाले पंड़ितों पर व्यंग्य–प्रहार करते हुए वे कहते हैं –

पंड़ित सअल सत्थ बक्खणई। देहई बुद्ध बसंतण जाणई।

अमणागमण तेण विखंडइ। तोब्रि णिलज्ज भणर्र हो पंड़िअ।

पंडित सकल सत्य का बखान करता है, किंतु इतनी सी बात नहीं जानता कि बुद्ध (आत्मा) इसी शरीर में वास करता है। जन्म– मरण के बंधन को तोड़ने में वह असमर्थ है, फिर निर्लज्ज कहता फिरता है कि पंड़ित हूँ। एक ओर, यह उक्ति पंड़ित की अल्पज्ञता पर प्रहार करती है तो दूसरी ओर वैदिक धर्माचार और तत्त्व–दर्शन पर, जो सिद्धों की दृष्टि मे ं निर्वाण–प्राप्त कराने में असमर्थ है। इस प्रकार हिंदी में कविता के उद्‌भव के साथ ही व्यंग्य का उद्‌भव भी हो गया था। इसी व्यंग्य–परंपरा का विकास कबीर और दूसरे संत कवियों के काव्य में दिखाई देता है। हिंदू–मुसलमानों के निरर्थक धर्माचार तथा बाह्यांडबर का पर्दाफाश कबीर ने जमकर किया। जिस आत्मविश्वास के साथ, उन्होंने तत्कालीन कुरीतियों एवं असंगतियों पर अपनी प्रखर वाणी से नश्तर चुभोए, उतने और किसी रचनाकार ने नहीं। अपने अक्खड–अंदाज में लक्ष्य पर तीव्र प्रहार करने में उनका मुकाबला कोई नहीं कर सकता।

व्यंग्यकार के साहित्य में व्यंग्य और रवीन्द्रनाथ त्यागी का व्यंग्य :

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में एक ओर नयी कहानी आंदोलन तेजी से चल था वहीं दूसरी ओर आंदोलन युक्त व्यंग्य कथायें भी साथ चल रही थी। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व व्यंग्यात्मक लेख बहुत ही कम कहानियाँ प्राप्त होती हैं। 1950 के बाद इस प्रकार की कहानियों में तेजी आई। स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में समाज एवं राजनीति में निरंतर बढ़ती–विसंगतियों से चलकर निकलना कठिन ही नहीं असंभव था। जीवन के साथ–साथ संघर्ष मे ं भी कई विषमतायें दिखलाई देती हैं और इन विसंगतियों में ही व्यंग्य छुपा होता है। व्यंग्य को कलात्मक संयम की कसौटी पर खरे उतरने वाले व्यंग्यकारों में हरिशंकर परसाई एवं शरद जोशी के नाम सर्वोपरि हैं। हिन्दी के व्यंग्यकारों मे ं हरिशंकर परसाई ने उसी तीक्ष्ण व्यंग्य लेखनी से आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक और धार्मिक जीवन के सभी क्षेत्रों में व्याप्त विकृतियों एवं विषमताओं का पर्दाफाश किया है। इन्होंने तीखे व्यंग्य से मार्मिकता को उभारा है। इनकी व्यंग्य की पैनी दृष्टि चँहु ओर घूमती है। परसाई जी ने हिन्दी कहानी को जीवंतता और सशक्तता प्रदान की ''हंसते हैं–रोते हैं'' जैसे उनके दिन फिरे, 'सदाचार का ताबीज', 'शिकायत मुझे भी है', 'भोलाराम का जीव' इनकी

व्यंग्यात्मक कहानियाँ हैं। नयी कहानी आंदोलन के समानान्तर ही परसाई का नया साहित्य दृष्टिगोचर होता है। वे आंदोलनबद्ध रचनाकार नहीं प्रस्तुत सामाजिक चेतना तथा उन विकृतियों को उजागर करने के लिए कटिबद्ध दिखाई देते हैं।

यंग्य कहानो के क्षेत्र में हरीशंकर परसाई के बाद दूसरा नाम शरद जोशी का है। एक सशक्त व्यंग्य कहानीकार के रूप में इनका नाम विख्यात है। सोद्देश्यता और सामाजिकता से सम्पन्न इनकी रचनायें प्रगतिशील दृष्टिकोण से परिचालित हैं। इनका क्षेत्र व्यापक है। 'किसी बहाने', 'परिक्रमा', 'जीप पर सवार इल्लियाँ', 'रहा किनारे बैठ', 'तिलिस्म', 'हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे' प्रमुख कथा संग्रह है। हिन्दी व्यंग्य साहित्य को नये तेवर से संवरने और प्रतिष्ठित स्थान दिलाने वाले व्यंग्यकारों में जोशी अग्रणी है। 'मेरे क्षेत्र के प्रति', 'एक सर्वेक्षण', 'बेकारी बोधर', 'रोटी और घण्टी का संबंध', टिच्च कहानियाँ इनकी श्रेष्ठतम रचनाओं में से है।

शासकीय और सामाजिक जीवन की विसंगतियों पर वैलौस व्यंग्य करने में श्रीलाल शुक्ल अद्वितीय माने जाते हैं। 'राग दरबारी' उपन्यास व्यंग्य उपन्यासों में प्रमुख है। इसी प्रकार इनकी व्यंग्य कहानियाँ भी सशक्त और उच्च व्यंग्य से भरी है। 'अंगद का पाव', 'यहाँ से वहाँ' इनके प्रमुख कथा संकलन हैं। प्रभाकर माचवे में व्यंग्य करने की बड़ी शक्ति है। इनके व्यंग्य बड़े चुभते हुए होते हैं परन्तु सर्वत्र उनमें एक प्रकार की अनासक्ति विद्यमान रहती है। इसका असर क्या हुआ और कितना हुआ? वे यह नहीं सोचते हैं।

उपसंहार

हिंदी व्यंग्य के क्षेत्र में व्यंग्य की दिशा बदलती सामाजिक परिस्थितियों की प्रतिक्रिया में विकसित होती रही है, जो परसाई जी से शुरू होकर आज तक जारी है। यह विकास क्षेत्र की शुरुआत से ही हो रहा है। काफी समय से यह आंदोलन चल रहा है। यह परिवर्तन तब से लगातार जारी है जब से इस क्षेत्र की स्थापना हुई थी, शुरुआत से ही। इस समय तक यही स्थिति है, यानी देश को आजादी मिले कई वर्ष बीत चुके हैं। सबसे सशक्त प्रकार का लेखन जो अब सुलभ है वह व्यंग्य लेखन है, इस तथ्य के बावजूद कि व्यंग्य के कई संग्रह हैं जो काफी गुणवत्ता वाले हैं। ऐसा कहा जा रहा है कि, यह इस तथ्य के बावजूद है कि ऐसा लेखन सुलभ है।

संदर्भ

डॉ. वीरेन्द्र मेंहदीरत्ता, आधुनिक हिंदी के व्यंग्य, पृष्ठ क्रमांक 1 से उद्धृत किया गया है।

पत्रिका 'कल्पना' के दिसंबर 1955 के अंक में 'कात्यायन' से उद्धृत किया गया है।

पं. कालिकाप्रसाद, वृहत हिंदी कोष, पृ. 1915

डॉ. लाल, लक्ष्मीनारायण, हिंदी कहानियों की विकल्प विधि का विकास, पृ. 38

डॉ. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 282

डॉ. लाल, लक्ष्मीनारायण, हिंदी कहानियों की विकल्प विधि का विकास, पृ. 38

डॉ. शुक्ल रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 503

सं. डॉ.. रामदरश मिश्र (परिचर्चा) दो दशक की यात्रा –हिंदी कहानी, पृ. 278

डॉ. त्यागी, रवीन्द्रनाथ/संपादक कमल किशोर गोयनका, प्रतिनिधि रचनाएँ, पृ.315–16

परसाई हरीशंकरः परसाई रचनावलीः भाग 1 पृष्ठ 165, प्रथम संस्करण, 1985, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

परसाई हरीशंकर, परसाई रचनावलीरू भाग 1, पृष्ठ 15, प्रथम संस्करण, 1985, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

परसाई हरीशंकर, दो नाक वाले लोग, द्वितीय संस्करण, 1998, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

डॉ. रावत, आशा, कवि और व्यंग्यकार –रवीन्द्रनाथ, त्यागी, वर्ष 2001 (प्रथम संस्करण), 57, नाथणी भवन, मित्र राजाजी का रास्ता, चांदपोल बाजार, जयपुर–302001, पृष्ठ क्रमांक 322 से उद्धृत किया गया है।
डॉ. (श्रीमती) शहापुरे, सुरेखा बाला साहेब, ''रवीन्द्रनाथ त्यागी–कवि एवं हास्य व्यंग्यकार, वर्ष 2007, श्रुति पब्लिकेशंस, 50 क 6, ज्योतिनगर, जयपुर –302005, पृष्ठ क्रमांक 3 से उद्धृत किया गया है।
डॉ. (श्रीमती) शहापुरे, सुरेखा बाला साहेब, ''रवीन्द्रनाथ त्यागी–कवि एवं हास्य व्यंग्यकार, वर्ष 2007, श्रुति पब्लिकेशंस, 50 क 6, ज्योतिनगर, जयपुर –302005, पृष्ठ क्रमांक 4 से उद्धृत किया गया है।
डॉ. (श्रीमती) शहापुरे, सुरेखा बाला साहेब, ''रवीन्द्रनाथ त्यागी–कवि एवं हास्य व्यंग्यकार, वर्ष 2007, श्रुति पब्लिकेशंस, 50 क 6, ज्योतिनगर, जयपुर –302005, पृष्ठ क्रमांक 5 से उद्धृत किया गया है।
डॉ. (श्रीमती) शहापुरे, सुरेखा बाला साहेब, ''रवीन्द्रनाथ त्यागी–कवि एवं हास्य व्यंग्यकार, वर्ष 2007, श्रुति पब्लिकेशंस, 50 क 6, ज्योतिनगर, जयपुर –302005, पृष्ठ क्रमांक 5 से उद्धृत किया गया है।
डॉ. (श्रीमती) शहापुरे, सुरेखा बाला साहेब, ''रवीन्द्रनाथ त्यागी–कवि एवं हास्य व्यंग्यकार, वर्ष 2007, श्रुति पब्लिकेशंस, 50 क 6, ज्योतिनगर, जयपुर –302005, पृष्ठ क्रमांक 6 से उद्धृत किया गया है
डॉ. (श्रीमती) शहापुरे, सुरेखा बाला साहेब, ''रवीन्द्रनाथ त्यागी–कवि एवं हास्य व्यंग्यकार, वर्ष 2007, श्रुति पब्लिकेशंस, 50 क 6, ज्योतिनगर, जयपुर –302005, पृष्ठ क्रमांक 7 से उद्धृत किया गया है।
डॉ. रावत, आशा, कवि और व्यंग्यकार –रवीन्द्रनाथ, त्यागी, वर्ष 2001 (प्रथम संस्करण), 57, नाथणी भवन, मित्र राजाजी का रास्ता, चांदपोल बाजार, जयपुर–302001, पृष्ठ क्रमांक 266 से उद्धृत किया गया है।